विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – सप्तम **दिनांक -०७ -०७ - २०२१**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज आ रही रवि की सवारी नामक शीर्षक के बारे में अध्ययन करेंगे।

पाठ -12

आ रही रवि की सवारी

संक्षिप्त जीवन परिचय

डॉ हरिवंश राय बच्चन :-

डॉ. हरिवंशराय बच्चन' का जन्म 27 नवंबर सन् 1907 ई. को प्रयाग में हुआ। इनको रचनाओं में 'मधुशाला', 'मधुकलश', 'निशा निमंत्रण', 'एकांत संगीत', 'सतरंगिणी' आदि विशेष प्रसिद्ध हैं। उनकी आत्मकथा 'क्या भूलूँ क्या याद कर एक अनूठी रचना मानी जाती है। इनका निधन 18 जनवरी सन् 2003 ई. को मुंबई में हुआ था।

अभ्यास

शब्दार्थ :-

रवि = सूर्य।

नव = नया।

कुसुम =फूल।

पथ रास्ता।

अनुचर = पीछे चलने वाला, सेवक।

स्वर्ण सोना।

पोशाक = परिधान, वस्त्र ।

विहग =पक्षी।

चारण =प्रशंसा गीत गाने वाले।

कीर्ति =यश

तारक= नक्षत्र, तारे।

ठिठकना= सहसा रुक जाना।

आ रही 'रवि की सवारी' नामक कविता से लिया गया है जिसके कवि हरिवंशराय बच्चन हैं। यहाँ पर कवि ने सूर्य के आगमन का मनोहारी वर्णन किया है। जब सूर्योदय होता है तब ऐसा प्रतीत होता है जैसे सूर्य अपने नव किरणों के रथ पर सवार होकर चला आ रहा है। ... यहाँ पर कवि ने सूर्य की प्रशंसा का वर्णन किया है।

जिसके कवि हरिवंशराय बच्चन हैं। यहाँ पर कवि ने सूर्योदय के दृश्य का चित्रण किया है।

रात के अँधेरे के बाद जब सूर्य का प्रकाश धरती पर पड़ता है तो आकाश से लेकर धरती तक दृश्य बड़ा ही आकर्षक होता है। सूर्य की किरणें चारों और फैलने लगती है सारी प्रकृति सूर्य के इस आगमन का अपने-अपने ढंग से स्वागत करने लगते हैं।

इस प्रकार कवि ने यहाँ पर प्रकृति की परिवर्तनशीलता के अटल सत्य को चित्रित किया है।

प्रस्तुत प्रश्न आ रही 'रवि की सवारी' नामक कविता से लिया गया है जिसके कवि हरिवंशराय बच्चन हैं। यहाँ पर कवि ने सूर्य के आगमन का मनोहारी वर्णन किया है।

जब सूर्योदय होता है तब ऐसा प्रतीत होता है जैसे सूर्य अपने नव किरणों के रथ पर सवार होकर चला आ रहा है। कली और पुष्पों से पूरा रास्ता सजाया गया है। बादल मानो सूर्य के स्वागत के लिए रंगीन पोशाक पहन कर खड़े हों।

प्रस्तुत प्रश्न आ रही 'रवि की सवारी' नामक कविता से लिया गया है जिसके कवि हरिवंशराय बच्चन हैं। यहाँ पर कवि ने सूर्य की प्रशंसा का वर्णन किया है। प्रातकाल:जब सूर्य का उदय होता है तो रात के अंधकार से सभी को मुक्ति मिलती है ऐसा महसूस होता है जैसे कोई राजा अपने स्वर्ण रथ पर सवार होकर विजयी होकर आया हो और अपने राजा को देखकर उसके पक्षीरूपी चारण और बंदीगण उसकी प्रशंसा में कीर्ति के गीत गा रहे हो।